श्री जगदीश कीर्ति शतक

लेखिका

सिद्धि श्री महारानी श्री लक्ष्मी जी
कृपापात्राधिकारिणी श्रीमती
परिहारिन महारानी बाजी साहिबा
कीर्ति कुमारी जू देई देवी
राज्य रीवाँ, विंध्य प्रदेश
मध्य भारत

*

सं० २००७
दित कृष्ण पक्ष जेष्ठ ११ (एकादशी)

या यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

* ओ३म् *

श्री जगदीश कीर्ति शतक

लेखिका

सिद्ध श्री महारानीधिरानी श्री लक्ष्मीजी

कृपा पात्राधिकारिनी श्रीमती

श्री परिहारिन महारानी

रानी साहेबा कीर्ति

कुमारी जू देई

देवी

राज्य रीवाँ विंधप्रदेश

मध्य भारत

प्रकाशक—
कृष्ण दास पूर निवासी भैय्या लाल रघुनाथसिंह भूतपूर्व
कामदार ड्यौढ़ी श्रीमती श्रीपरिहारिन महारानी
कीर्ति कुमारी जू देवी श्री बाजी साहेबा
किला-रीवाँ राज्य
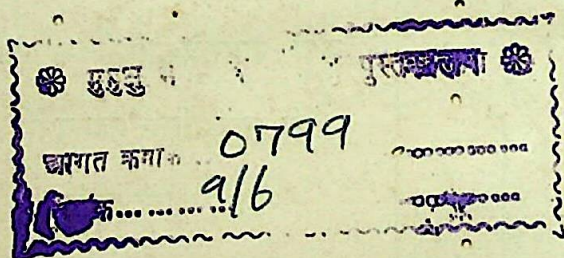
मुद्रक:—
साधना प्रेस,
कानपुर

प्रस्तावना

परमपूज्य श्रीमान् वाघवेश प्रभु रीवाँ नरेश वीर व्यंकट रमणसिंह जू देव जी अपने शासन-काल के भारतीय नरेशों में अग्रगण्य माने गये हैं। जिनकी अलौकिक शूर-वीरता, न्याय, नीति की कुशलता, सरलता देश, जाति और समाज प्रियता, दान सन्मान गुण ग्राहकता इत्यादि-इत्यादि सभी राजधर्म-लक्षणों तथा गुणगणों की ख्याति जगतव्यापी हो चुकी है।

प्रस्तुत पुस्तक जगदीश कीर्ति शतक की लेखिका वैष्णव धर्म-परायणा प्रातःस्मरणीया श्रीमती श्री परिहारिन महारानी कीर्ति कुमारी जू देवी बाजी साहेबा उन्हीं महापुरुष की पाणि-गृहीत्वा सर्वश्रेष्ठ कनिष्ठ धर्मपत्नी हैं। अब से बीस वर्ष पहले मुझ तुच्छ सेवक को श्रीमती श्री बाजी साहेबा तथा आपके परम प्रभावशाली महा प्रतापी वीर पुत्र श्रीमान् राघवेन्द्र साहेब बहादुर के चरण-कमलों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त था उस समय मेरे विचार से श्रीमती बाजी साहेबा नवधा भक्तियों की साक्षात् मूर्ति बन प्रेमा भक्ति की पूर्णाधिकारिणी हो रही थीं। आपका उद्देश एक था, लक्ष्य एक था, भरोसा एक था, आशा एक थी और वह थी दीनानाथ प्रभु के चारु चरणारविन्दों के दर्शन की लालसा संसार की सब चिन्ताओं को त्याग, दिन रात श्री दीनानाथ प्रभु का ध्यान, चिन्तन और गुण-गान करना ही उनके जीवन का एक मात्र कार्य्य था। नहीं कह सकता कि श्रीमती श्री बाजी साहेबा इस समय भक्ति योग में कौन से पद की अधिकारिणी हैं। हाँ, एक कवित्त श्रीमती बाजी साहेबा का विरचित किया हरि भक्त सज्जनों के अवलोकनार्थ लिख रहा हूँ जिसके भावों से मालूम होता है कि आप सारूप्य भक्ती की पूर्णाधिकारिणी बन, परमानंद को प्राप्त हो रही है।

कवित्त

शीस मोर मुकट विशाल भाल तिलक,
श्रवण कन्न कुण्डल झलक झलकाते हैं।
अति लटकारी मृदु मंजु घुघरारी कारो,
अलक कपोलन छलक छलकाते हैं।
गरे बनमाल कटि किंकिणी जड़ित जाल,
पीत पट तड़ित सुछोर छहराते हैं।
लटक त्रिभंग अंग अंगन सुहाये कीर्ति,
दासिका के रूप में स्वरूप दर्शाते हैं।

मेरी दीवानी (कामदारी) के समय आपने दो पुस्तकें लिखी थीं "गोदाम्बागान" व "श्री राधाकृष्ण विनोद भजनावली" जो चार पाँच सौ पृष्ठ की बड़ी पुस्तकें थीं जो छप चुकी थीं। अब तो आप बीस पंचीस पुस्तकें—"भक्त-प्रभाकर, ज्ञान-माला ज्ञान-दीप, कीर्ति-पुष्पाञ्जलि. कीर्ति-रमण, कीर्ति-माधुरी, कीर्ति-निधि, कीर्ति-चिन्तामणि, कीर्ति-लता, कीर्ति-गंगे. कीर्ति-गोविन्द कीर्ति-सुधा, श्री बद्रीश कीर्तिशतक" इत्यादि-इत्यादि लिखकर छपवा चुकी हैं। भक्त साहित्य ही नहीं धार्मिक, न्याय, नीति, धीरता-वीरता इत्यादि के इतिहास क्षेत्र में भी आप अद्वितीय आदर्श महिला हैं।

—प्रकाशक

अर्पण

॥ सवैया ॥

जगदीश तुम्हारा ए कीर्ति शतक,
स्वीकार करो भवनाशन स्वामी ॥
जानू नहीं कविताई प्रभो,
इक चरण भरोस तेरो खगगामी ॥
जानत हौ सर्वेश सर्वोघट,
व्यापि रहे तुम अन्तर्यामी ॥
सोई कृपा से लही गुनगान,
शरण मोहिं देन भरो अब हामी ॥

दोहा

शर्ण राखिये कीर्ति को, हे जगदीश सुजान ।
गुन गाथा स्वीकार प्रभु, चर्ण आश्रिता जान ॥

लेखिका

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

❀ जगदीश-शतक ❀

विनय

॥ दोहा ॥

विनय करूँ गुरु राज जी, श्री चरनन शिर नाय ।
जगन्नाथ प्रभु पद कमल, सुमिरि कीर्ति दिन जाय ॥
परमेश्वर जगदीश जू, वारम्वार प्रणाम ।
दया दृष्टि करि कीर्ति को, देहु शरण विश्राम ॥

॥ सवैया ॥

(१)

चरणों में प्रणाम त्रिमूर्ति विभो, वल भद्र प्रभो नीलाद्रि सुभद्रे ।
कल्याण मयी जन हेतक जू, पद पद्म शर्णनि वसाव सुभद्रे ॥
कौन दुखी त्रैलोक्य वसे, जिन के अवलम्व तू अम्ब सुभद्रे ।
कीर्ति विनै गुनगान सप्रेम, निवाह उवार भवाब्धि सुभद्रे ॥

(२)

महिमाँ क तो पार न वार प्रभो, जन हेत रमेश त्रिलोक हरे ।
केहि भाँति सो गान सप्रेम करें, करुणा करिये जम जीव तरे ॥
विधि वेद न भेद वताय सके, फिर जेतिक कीर्ति सु कैसे सरे ।
जन आपन जान द्रवो नीलाद्रि, विन गुनगान जु कैसे तरे ॥

(३)

विछुड़े हम दुक्ख लहे निज कर्म,सम्हार करो तो वड़ाई तुम्हारी ।
त्रैलोक्य अधीश्वर जू तुमहीं, कहिये कहँ जायँ लिये अघ भारी ।।
दीन सनेह कि बान सदा कि, सुनी महिमा अति द्वार सिधारी ।
नाम अभै दीनानाथ भलो, जगदीश पुनीत सो कीर्ति उबारी ।।

(४)

सुनि लेहु पुकार प्रभो दीनानाथ,निबाह करो तो वड़ी गति सारी ।
नाहिं न दूसर ठौर हरे, अज्ञानिन के तुमहीं हितकारी ।।
जाप न यज्ञ न तीर्थ व्रतौ, सत कर्म कछू न सधै भवतारी ।
दर्श प्रसाद तुम्हार बड़ा, जगदीश कि शर्ण-कीर्ति हितकारी ।।

(५)

जग जन्म लहे क यही फल तो,जगदीश कि आश हितौ चित धारी ।
मानव जीवन योग्य यही, विगड़ै न कवौ सुख हेत विचारी ॥
शर्ण गहे बनिहैं जग चेतन, तीर्थ प्रसाद महा अघ टारी ।
जै जगदीश के चर्ण सुपंकज, कीर्ति सप्रेम भजे गति सारी ॥

(६)

अवतार धरयो जग क्षेम हरे, कस चेतन हेत न आप विचारी ।
झेलि महाँ दुख भौर पड़े, कलि राज प्रवाह झुकी अँधियारी ।।
नाम बिना जगदीश रटे कहु, कौन सहायक कष्ट निवारी ।
ता हित कीर्ति पुकार करी, शर्णागत हूँ नीलाद्रि तुम्हारी ।।

(७)

आय दुआर पड़ी प्रभु जी, अघ संचित भीति बढ़ी सुन स्वामी।
औगुण ब्याज सहस्त्र गुना, नहिं धीरज होत हृदय खग गामी॥
नाम जुपावन पातक हान, करावन आइ हूँ अंतरयामी।
हे जगदीश जु कष्ट हरो, अपनइहौ न कीर्ति तो है बदनामी॥

(८)

जबसे महिमाँ नीलाद्रि तुम्हार, सुनी नहिं रंचक भीति हमें।
कलि राज गराज सुने न डरें, अघ ताप नसावन युक्ति जमें॥
त्रैलोक्य अधीश हरे जगदीश, जु नाम सुने विश्वास जमें।
परसाद सुपंकज चर्ण मिले, गति कीर्ति पुकार उबार हमें॥

(९)

भगवान हरे जगदीश तुम्हार, उदार चरित्र जु वेद बखाने।
कौन हरै भव कष्ट विना प्रभु, दोष सो आपन नाथ न जाने॥
नाम पवित्र को जाप सदा, भव ताप नसावन की मन ठाने।
आय समीप सुधार चहूँ, प्रभु कीरति दूसर द्वार न जाने॥

(१०)

कौन कृपालु तुम्हार समान, जो तापित पापिन को सुख दइया।
कौन के द्वार कहो अब जायँ, मढ़े अघ से को शर्ण देवइया॥
गीध अजामिल भिल्लिनि आदि, तुमहीं तो अघी जन के उबरइया।
कीर्ति के दीनानाथ सुनो, जगदीश तुमहीं मम हेत करइया॥

(११)

आय पड़ी प्रभु शर्ण तरे, अब तो अपनावन नाथ परी ।
विगड़ी को वनऽवन वाल तुम्हीं, स्वैवान सदा कि जु औण धरी ।।
विनती जगदीश यही अवतो, अघ तापित कष्ट निवार करी ।
केहुँ जन्म व योनि न दूर रहूँ, शर्णागत कीर्ति पुकार करी ।।

(१२)

हम आश्रित दीनानाथ तुम्हार, सदा पद सेवन की भिखियारी ।
दीन सनाथ तुम्हीं तो करो, दे शर्ण हरो भव की भय सारी ।।
कष्ट अपार किनार नहीं, विनती जगदीश सुनो चित धारी ।
कीर्ति सम्हार करैं क पड़ी, सरवस्व तुम्हीं हमरे हितकारी ।।

(१३)

आप समान कोऊ तो नहीं, शर्णागत रक्षक हे सुखदानी ।
पातक मोचन हो तुमहीं, तुमहीं त्रैलोक्य परे बर्दानी ॥
आय दुआर पड़ी प्रभु जी, करुणा निधान यह वेदन वानी ।
चूक क्षमा करिए जगदीश, अकिंचन कीर्ति चर्ण रति मानी ।।

(१४)

हौं तो गरीब गरीब नेवाज, अघी हूँ तो हो अघमोचन आपी ।
कर्म सतो कुछ जानूँ नहीं, परमेश्वर तू तो सर्वे घट व्यापी ।।
सर्व प्रकार विकार भरी, बिन शर्ण रमेश भई संतापी ।
दर्श प्रसाद मिले जगदीश, तो कीर्ति तरी महिमा विधि थापी ॥

(१५)

जानूँ नहीं विधि वेद गती, प्रभु नाम अपावन पावन कारी ।
ताहित द्वार पड़ी अब आय, हरे जगदीश हुँ शर्ण तुम्हारी ।।
कीन वितर्क कवौं न मुरार, महाँ अघ धारिन कीन सुखारी ।
कीर्ति के जीवन प्राण सदा, गुनगान सप्रेम अवश्य उवारी ।।

(१६)

कौन सी चूक विचार हरे, अवलोकन कीन न हाल हमारी ।
दुक्खवती अति व्याकुल नीर, ढरैं दिन रैन बिना हितकारी ।।
व्यापि रहे सब ठौर भली विधि, जानत हो प्रभु मोर खुवारी ।
कीर्ति गहो कर आपन जान, हरे जगदीश तु शर्ण तुम्हारी ।।

(१७)

काह करूँ कस धीर धरूँ, विन दर्श अराम नहीं जगदीशा ।
नाहिं तो है सामर्थ कछू, जप यज्ञ सतो कृत पातक पीशा ।।
त्रेता द्वापर सत्य समै के, अघी निर्वान लहे अस दीशा ।
कीर्ति अवश्य सुनो दीनानाथ, चही कलिराज समै पद हीशा ।।

(१८)

नेक तो दर्श दिखाव हरे, जगदीश महात्म अपार तुम्हारा ।
लागि रही अभिलाष बिलोकन, चर्णन मानत नैन हमारा ।।
मार्ग अगम्य न सूझि परै, किहिं भाँति मिलूँ विन पाए सहारा ।
हो भगवान तु जीवन प्राण, मिले विन कीर्ति के नाहिं सम्हारा ।।

(१९)

ढिग बोलि हमें आश्वासन युक्त, अभै कर हे परब्रह्म रमेशू ।
डंसित सर्प समैं विष ज्वाल, जरै दिन रैन महान कलेशू ।।
पातक घात करै न बनै, सतकर्म हमेश रहै अंदेशू ।
कीर्ति तुम्हार उबार करौ, जगदीश हरे तुमहीं अखिलेशू ।।

(२०)

दुक्ख विनासन बान सदा, अनजान बने कस हेतु मुरारी ।
कौन हरी जन कष्ट हरे, जगदीश तुम्हीं जग के हितकारी ।।
पाप छुड़ावन युक्ति यही, शरणागत हूँ अखिलेश तुम्हारी ।
बाँह गहौ तो करै भव पार, विना प्रभु कीर्ति सकै को उबारी ।।

(२१)

टुक हेर हरे जगदीश सुजान, दुआर पड़ी अब आय तुम्हारे ।
पातक कीन महान परन्तु, महा बलवान तुम्हीं हे मुरारे ।।
भीति हरो तुम्हरो विधि वेद, महात्म अनूपम शेष पुकारे ।
कीर्ति के जीवन प्राण प्रभो, जगदीश बिना कहु को दुख टारे ।।

(२२)

देवेश हरे जगदीश सुनो तो, कहूँ निज कष्ट वियोग तुम्हारे ।
दुक्ख निवारक चण तुम्हार, मिले बिन जो दिन बीत हमारे ।।
सो न कहे चुकिहैं संताप, कहो तो भला कस मोंहिं बिसारे ।
आस भरोस तुम्हार धरे, प्रभु कीर्ति लगावहु आय किनारे ।।

(२३)

जा दिन सों करुणानिधि को, नहिं दर्शलही दुख अत्ति समानो ।
हौं तो कछू उत योग न जानूँ, योग जपौं सत कृत्य न भानो ।।
कासों कहूँ उत जाय कहै, जहँ श्री जगदीश कियो अस्थानों ।
आँसुन अर्घसमर्पि करैं नित, ध्यान कीर्ति हितकार प्रमानों ।।

(२४)

आवत नाहिन मोहिं बुलावत, हाय दई कैसी अनरीती ।
जादिन सो नहिं दर्श लही, ताही दिन सो उलटी भई प्रीती ॥
आस हमार सदा चर्णों में, रह्यो अब लौं नहीं दूसर हीती ।
श्री जगदीश क्षमा कर चूक, मिलो फिर कीर्तिं हरो भव भीती ।।

(२५)

आप दयालु सदा के प्रभू, नहिं औगुन चित्त धरा करिये ।
हम तामस कर्म प्रवीन सदा, ताहे त अनिष्ट हरा करिये ।।
सतमूर्तिं पवित्र अनंत हरे, स्वैनाम प्रभाव फला करिये ।
चर्णों में प्रवास अकिंचन कीर्तिं को, दे भव पार करा करिये ।।

(२६)

साम्राट त्रिलोक तुम्हीं जगदीश, गरीब नेवाज भये साम्राटी ।
और न दूसर की सामर्थ, छुड़ावन भीति जिती सुरपाटी ।
ताहि सूँ शर्ण अमोघ तुम्हार जु, चाहत देवहुँ जो जन वाँटी ।
हे अखिलेश उबार करो, कलि कीर्तिं विनै महि माँ पद ठाटी ।।

(२७)

निवसे गिरि नील तो संक नहीं, हम ढूँढ़त चर्ण हितौ चित धारी।
दूर भई तकसीर मई, जपि नाम व गान सनेह प्रसारी ॥
चूक क्षमा करिहो जगदीश जो, तामस फाँस नसी दुख टारी।
कीर्ति के दीनानाथ सुनो, करिहो करुणा मोहिं दीन निहारी ॥

(२८)

तुमहीं तो सर्वथा वासुदेव, निवसे जल-थल जन के मन में।
फिर औगुन चित्त धरो न प्रभू, जगदीश अधीश तुम्हीं जग में ॥
दुर्भाग्य से ज्ञान जहान नहीं, कलि छाय रह्यो थल में तन में।
दीनानाथ तुम्हार भरोस जिसे, तरि कीर्ति अवश्य रही पद में ॥

(२९)

हम आवन चाहत हें जगदीश, तुम्हार समीप सुदर्श हितै।
पर पाप गराज भयंकर शब्द, करै विध्वंसन तर्क नितै ॥
अवलम्बन शर्ण तुम्हार गहे विन, ठौर नहीं मन कर्हुं वितै।
करि देहु दया तो धरै कुछ धीर, भ्रजै भव भ्रांति जु कीर्ति कृतै ॥

(३०)

जब याद करोगे गरीबन की, तब कौन बिगाड़न वाल बली।
सर्वेश जु शर्ण तुम्हार बड़ी, गहि लीन तो पातक की न चली ॥
तुमहीं ब्रह्मांड पती अस जानि, दिवारन ताप सुचर्ण तली।
निर्भै ह्वै कीर्ति तरी जगदीश, सदा गुन गाय सुकर्म फली ॥

(३१)

उल्लंघि महा अघ जाव समीप, सुनी अघ मोचन नाम बड़ाई।
देहिं अभै कर श्री जगदीश, महा शर्णागत पाप छोड़ाई ॥
और न शक्ति प्रपत्ति कर्तौ, यक रक्षक है त्रैलोक्य गोसाईं।
कीर्ति के जीवन प्राण सदा, दीनानाथ अवश्य करेंगे सहाई ॥

(३२)

नाम उदार सुनी जब से, तब से बिन दर्श रहा नहिं जाई।
कौन घड़ी वह आई भली, जब जाय शर्ण गहिहौं सुखदाई ॥
नैन कि प्यास बढ़ी छवि पै, कब तृप्त कि युक्ति बनी यदुराई।
मोहिं बुलाव कृपालु प्रभू, तो कीर्ति सदा तुम्हरो गुनगाई ॥

(३३)

जायँ कहूँ न बिना सनमान, सदा से तो सेवन प्रेम प्रसारी।
आज अजान बने तजि मोंहि, भला वहके मन कौन सम्हारी ॥
नाहिन रीत क्यौंकि रही, हम आपन होय भई अब न्यारी।
चूक क्षमौ जगदीश सुनो, सुधि लेहु दासिका कीर्ति तुम्हारी ॥

(३४)

आप बड़े महिमा सुअनंत, अहो भगवंत नहीं गति मेरी।
बुद्धि नहीं लघुताई तमाम, भरी अँग अंग जगौ भै अँधेरी ॥
ज्ञान प्रकाश समाप्त किए, कैलि तामस व्याप्त भली मति फेरी।
कीर्ति हरे जगदीश तुम्हार, विभूति उबार करी कस देरी ॥

(३५)

तुमहीं जग के त्राता जगदीश, विना संभार किये न वनी ।
अवनीं जन त्रासित ग्रासित द्वन्दक, तामस जाग्रत की छत्रनी ॥
निवहेन कछू सतकर्म जरे, जगव्यापि रही अघ की दवनी ।
सत पंथ सम्हार करावन हेत, प्रभु के समीप कीर्ति गवनी ॥

(३६)

टुक हेर प्रभु आश्वासन दे, कर देर नहीं हम दुक्ख मई ।
जन आपन्न जान दुराव तजो, प्रभु शर्ण एकहीं सुक्ख मई ॥
सामर्थ स्वतः संपन्न सदा, असनाथ तुम्हीं अघ नष्ट मई ।
ताहेत सो आई दुआर तुम्हार, तुम्हीं सति कीर्ति के इष्ट मई ॥

(३७)

विनतीजगदीशसुनोतो भला, तजि नाथ किआस कहां अब जाऊँ ।
कर्म कछू सतकीनं नहीं, ताहेत सो सनमुख होत लजाऊँ ॥
दीनन वाल विलोकि तुम्हें, सरवस्व समक्ष न पाप दुराऊँ ।
हूँ तो अकर्मिन श्रेष्ठ सुनो, पर कीर्ति प्रभूके शरण तरि जाऊँ ॥

(३८)

पातकि जानि घ्रणा ना करो, नहिं होत प्रबोध बिना प्रभु तेरे ।
कीन्हें अधर्म न चीन्हें तुम्हें, भिलगे दुख आपन भोग्य घनेरे ॥
पुन्य लई गुरु के पद पर्शि, प्रकाशित बुद्धि तवै हरि हेरे ।
ऐ जगदीश प्रसाद प्रभाव, जरे अघ आप सो कीरति टेरें ॥

(३९)

इग दूसर नाहिं देखाय परै, जगदीश वसे प्रति स्वाँसन में ।
भगवान विना नहिं सार कछू, गुरु मन्त्र जपे विस्वासन में ।।
कुछ तो अनुभौ अब होन लगे, नीलाद्रि तेरे पद खासन में ।
कबहूँ दुरि दर्श प्राप्त कबहूँ, विकि कीर्ति गई मृदु हाँसन में ।।

(४०)

छवि कौन बखानि सकै प्रभु की, त्रैलोक्य सोहावन वाल तुम्हीं ।
चख दिव्य भये कछु देखि पड़े, जन आपन मानन वाल तुम्हीं ।।
विष ज्वाल जरे त्रिलगे मिलगे, संताप नसावन वाल तुम्हीं ।
जगदीश कृपालु जु कीर्ति फँसी, गुन गावन भावन वाल तुम्हीं ।।

(४१)

मन भावन श्री जगदीश प्रभू, विनती सुनिये नीलाद्रि मनी ।
सरवस्व तुम्हीं जनके हितकारक, कौन सी चूक हमार गनी ।।
अबलों न समीप बुलाय दियो, संबोध हरे त्रैलोक धनी ।
संतप्त हृदय नहिं धीर धरूँ, रखि कीरति लेहु शरण अपनी ।।

(४२)

कबसे निठुराई गही इतनी, पहिलेकि दया प्रभु डारी कहाँ ।
दुख व्यापित अंगहुँ जीर्न भये, दुरि बैठ पुकारि न जाय जहाँ ।।
खिन आए दिखाए सुदर्श हरे, अपनाए न छूटि हैं दुक्ख महाँ ।
कैलि कीर्ति कि बार सम्हार करो, श्री चर्ण जहाँ नहिं ताप वहाँ ।।

(४३)

चरणों के समीप हरे जगदीश, रहा हम चाहें कृपाल तुम्हारे।
दुक्ख तपी लखि कष्ट विभो, करुणा करके करिए तो सहारे॥
औगुन खान जो होती नहीं, फिर आइत काहेको आप दुआरे।
हो अघ मोचन साँचे तुम्हीं, ताहेत कीर्ति के तूहीं अधारे॥

(४४)

युग प्रतिन करी प्रतिपाल हरे, अघ त्रालेन को सो त्रिलोक बखाना।
कौन कि चूक गनी हरि जू, गणिकादिक हेत जटायु प्रमाना॥
भिल्लिनि मुक्ति सुमात सद्रिष्ट, महात्म जुबेर पर्शि निर्दाना।
ऐसो पवित्र प्रभू जगदीश, चहै कलि कीर्ति सोई गुनगाना॥

(४५)

भौतिक व्याधिग्रसी दिनरैन, महादुख खान मलीन सदा।
तन शक्ति नहीं कलि भीति भरी, नित्रहै किमि सत्यहुँ हीन सदा॥
नहिं संतन संगत हूँ बनती, वैराग न योगहु कीन कदा।
गुरु दीन बताय प्रभू जगदीश कि, शर्ण कीर्ति सुख लीन सदा॥

(४६)

जगदीश गुनाह विचार हमें, न तजो संताप नसावन हारे।
नाहिन आप समान उदार, कोई त्रैलोक्य जेते बल वारे॥
आपहिं के तो अधीन सर्व, तजि शर्ण कहाँ कहँ जाय पुकारें।
टारि सके न अरिष्ट कोऊँ, ताहेत कीर्ति पड़ि नाथ दुआरे॥

(४७)

कर्म अधीन पड़ी भव आय, वड़े करुणा वाले तुम्हीं जानी ।
आई छुड़ावन पाप महा, जगदीश उवारक सारँग पानी ।।
हूँ तो मलीन परंतु मेरे, दीनानाथ सदा जनके सुख दानी ।
पार अवश्य करें भव से, निश्चे मनमें कीरति अनुमानी ।।

(४८)

पातक श्वान कि काह चली, जिनके जगदीश नृसिंह सहाई ।
कीन कवौं न विचार महा, पतितो कि दशा दुखदीन हटाई ।।
ताहि सों नाम अनूप लह्यो, दीनानाथजी सर्व परे मन भाई ।
दीन दशा अवलोकि प्रभु, हरि लइहैं कीर्ति की भौ कठिनाई ।।

(४९)

जादिन सों प्रभु नाम सुन्यो, जगदीश दया जनपै बरसाई ।
तादिन सों नहिं रंचक भीति, भवाब्धि उलंघि सकूँ हरसाई ।।
नामको जाप प्रसाद वली, हरि दर्श महात्म कृपा सरसाई ।
जीवन प्राण प्रभु दीनानाथ, अभै करि कीर्ति चण परसाई ।।

(५०)

हम जानत नाहिं जु मार्ग तुम्हार, कही जस वेदन सोउ न चीना ।
कूट चरित्र बखान सकै न, कोऊ चर अचर सुरो परवीना ।।
दीन महावर दैत्य विरंचि, त्रिलोक वलीन कियो वल हीना ।
उल्टि गती विधि की जगदीश, महा मृग भक्त कीर्ति सुख दीना ।।

(५१)

हम चाहत चर्ण कि धूर वही, जोकरी पाषान से दिव्य सुनारी।
लीन प्रछालि वही पदविंदु, मल्लाह की वुद्धि भली हुसियारी ॥
कीन पवित्र विरंचि त्रिविक्रम, धोय कमण्डल ह्वैगे सुखारी।
ऐसे प्रभाविक श्री पदकंज, महेश लसे शिर कीर्ति उवारी ॥

(५२)

ह्वैगे पुनीत लहे पदनीर, बड़े त्रैलोक्य भये गति सारी।
शेष गणेश महेश विरंचि, मुनीश्वर सर्व सुरौ भे सुखारी ॥
ऐसे अमोघ प्रभू अघमोचन, नाम बड़े भ्रम नासन कारी।
श्री जगदीश कृपालु हरे, विनती पद कीर्ति चहैं भव तारी ॥

(५३)

कौन के कष्ट हरयो ना प्रभू तुम, काहि न दीन वड़ाइ भलाई।
रावरे के तो स्वभाविक कर्म, करै अघ नष्ट टुकौ मन लाई ॥
नाम अनूप महात्म प्रसाद, मिले से भई जन आत फलाई।
सिद्ध प्रसिद्ध शर्ण जगदीश, अवश्यहिं कीर्ति कि होई पलाई ॥

(५४)

पाप कमाय अनेक धरे, पै चली न कछू प्रभु नाम प्रतापू।
जान सके माहात्म नहीं तो, प्रभाव स्वयंम् वलवान हैं आपू ॥
ध्यान सदा गुन गान करे से, नसी भव की सब ही संतापू।
कीर्ति के जीवन प्रान निधान, करैं जगदीश रमेश कि जापू ॥

(५५)

करकी करकी करतूत सुने, सब कष्ट अरिष्ट नसी दुखदाई ।
गोपन मध्य रहे वृन्दावन, कंसक प्रेरक दुक्ख बढ़ाई ॥
श्रीकर से हति केशव केशिहिं, भीति तुरन्त त्रिलोक नसाई ।
दैत्यन दुष्टन नासि किते, जगदीश कीर्ति हितकार कन्हाई ॥

(५६)

गिरि राज धरयो नखपै ब्रजराज, महेन्द्र के गर्व नसावन को ।
वपु सात वर्ष दिन सात लगे, घनबूँद प्रलै बिन सावनको ॥
महिमा कुछ जान परी सुरराज, विनीत भयो पद ध्यावन को ।
गोवन्दि हरे जगदीश पुकार, सुकीर्ति चही पद पावन को ॥

(५७)

उनमत्त भए छवि देखि मनोहर, मोहन मोहनि नार भई ।
शिव रोकि सके न मनोज व्यथा, चख अस्थिर है सुधिहार दई ॥
भरि अंक लियो अतुराय तुरंत, चमंकि द्रुतै भजि नार गई ।
त्रैलोक्य भ्रमाय भए जगदीश, महेश्वर लज्जित कीर्ति मई ॥

(५८)

माया हरि की अतिही प्रवीन, विधि की गति हूँ बलहीन भई ।
सँग ग्वाल वत्स वन धेनु चरें, प्रभु खात खवावत हेत मई ॥
अस कौतुक देखि छके विधना, द्रुत वत्स व धेनु समेटि लई ।
जगदीश स्वै ग्वाल व धेनु वत्स, वनि गर्व हरे जग कीर्ति छई ॥

(५९)

हमहुँ तो चहैं वह शर्ण भली, जो चही युग चारहु के जन हैं।
दुखियान कि कान पुकार धरी, हमहुँ अवली अघिया पन हैं॥
नहिं सूझि परै कतहूँ अवतो, अरनी करनी सुख नहिं छन है।
अवलोकन कीर्ति करो जगदीश, करूँ अघ नष्ट यही प्रन हैं॥

(६०)

अपनी शुभ शर्ण देवावो हमें, मनिहैं न विना पद पाये तुम्हारे।
अत्ति लहे संताप छुड़ावहु पाप, परी हम नाथ दुआरे॥
दीन वनाय अनेकन को तो, हमारो गोहार सुनो हे मुरारी।
श्री बलभद्र सुभद्र प्रभू, जगदीश कीर्ति के प्राण पियारे॥

कवित्त

(६१)

जयति जय तुम्हारी जगदीश कमला के कंत।
भनत सुवेत जय अनंत वपु धारी की॥
अगम अगाध पंथ ग्रंथ थकि शेष रहे।
कौतुक निधान जय जय अखिल विहारी की॥
त्रिगुन रचाय विश्व व्यापी रहे सर्व ठौर।
जय जय सामर्थवान युग विस्तारी की॥
दीनानाथ शरण अमोघ जेन देन वारे।
जय जय पद कांति कंज कीर्ति उद्धारी की॥

(६२)

जय अखिलेश श्रीरमेश जगदीश नाथ ।
देहु चर्ण पंकज छुड़ाऊँ भव भीति को ॥
अवलो सही जू ताप आप नाम जाप विन ।
तामस प्रकाश की मिटाऊँ अनरीति को ॥
नीलाचल निवासी के शर्ण द्रुत जाय हम ।
विगड़ी वनाइहैं हटाय कलि नीति को ॥
दीनानाथ द्रविहैं पुकार सुनि कीरति की ।
तासूं दुआर पड़ि मँगिहौं पद प्रीति को ॥

(६३)

अश्रु जल सींचि नाथ चरन पखारूं धाय ।
कहुँ जगदीश दर्श देन की कृपा करो ॥
प्रेम नेम सेवा युत माँगन पदार विन्द ।
मोर अभिप्राय नाथ पूर्ति की कृपा करो ॥
बंदन अमंगल हरन हेत वार वार ।
विनै कै प्रदक्षिण तुम्हार दें कृपा करो ॥
दीनानाथ कै सनाथ कीर्ति भव पार कर ।
गुनगान गावन सुदान की कृपा करो ॥

(६४)

आवर्न दो चरण समीप दीनानाथ मोहिं ।
रूठे हो तो रूठो चाहे शरण तो जान दो ॥
योग्य हूँ नहीं तो पाप मोचन तुम्हारी आस ।
दीन हौ परी हूँ द्वार औगुन न ध्यान दो ॥
कर्म अनुसार ताप भोगि दुख व्यापि रही ।
अवना विगारो नाथ विनती पै कान दो ॥
कीर्ति हितकारी दूजा कोई तो त्रिलोक नहिं ।
क्षमा करि चूक सेवा प्रेम गुन गान दो ॥

(६५)

वनिहै वनाए गति दीनानाथ जू कृपालु ।
चित्त दुचिताई त्यागि शरण लगाइए ॥
हूँ तो नहिं जानूँ द्वार दूजो यक आप तजि ।
करुणा प्रसारि भव पार तो लगाइए ॥
वलहीन पातक अनेकन करन वारी ।
दीनवंधु दीनानाथ आपही कहाइए ॥
मदिं अब सर्व आप नाम के भरोसे प्रभु ।
प्यारे जगदीश कीर्ति को तो अपनाइए ॥

(६६)

शरणागत रक्षक अधीश त्रैलोक प्रभु ।
अमितन को तार्यो है तो मोहूँ को तारिए ।।
काहुँन की चूक ना विचारी दीनानाथ तुम ।
औगुन हमारौ महाँ चित्त नहिं धारिये ।।
पाए ना कुलीन सत्य व्रत तप धारि तुम्हें ।
दीन अपनाएते कृपालु कहवाइये ।।
साँचे पतित - पावन भव - तारन श्री चर्ण ।
कीर्ति सो प्रसाद दे जगदीश उद्धारिए ।।

(६७)

हूँ तो महा पापी पै आप तो पतित पावन ।
सामरथ वाल काहे शरण लगावो ना ।।
भटकि भटकि योनि लाखन चौरासिन में ।
कबहुँ न पाए त्रान अब भरमावो ना ।।
गुरू जी की कृपा से मिली है सत बुद्धि कुछ ।
जान्यो जगदीश नाम फिर तो नसावो ना ।।
कीरति अकिंचन को चरण प्रदान करो ।
दीनानाथ द्वार पड़ी अब बिलगावो ना ।।

(६८)

हौंतो अघ खान बनी अपने कुकर्म बस्य ।
तामस प्रकोप तन दुख अति छायो है ॥
ताहू पै महान इन्द्रियान को झकोर मच्यो ।
तृष्णा की डोर काम क्रोध उमड़ायो है ॥
आपन विरान कोई हितकार दीषै नहिं ।
कौन हूँ उबार नहिं मन ठहरायो है ॥
निर्दै कलिराज की दोहाई छाई दुनियाँ में ।
भौ उँबरइया जगदीश कीर्ति पायो है ॥

(६९)

दाहिबे कूँ पातक कलेश दैन वारो दक्ष ।
रक्षक जगदीश तूहीं है दीन जन को ॥
जग में अनेक अहित कार औ तन हूँ में ।
कैसे कालक्षेप होय सत्य संग जन को ॥
गुरु उपदेशक बिना तो नहिं ठौर कहुँ ।
तासूँ गुरु राज के चरण क्षेम जन को ॥
श्री सरवेश द्वार देहिं दरसाय तबहिं ।
पावै शर्ण कीर्ति दीनानाथ जू मिलन को ॥

(७०)

काहू को भरोस औ सहारो ना विचारूँ कबू ।
नहिं द्वार जाय केहुँ विपति सुनाऊँ ना ॥
कबहूँ तजि रावरे की चरण शर्ण आस ।
अन्य अमर्जन के समीप दुख गाऊँ ना ॥
पापी हूँ अकर्मी और दुर्जन कुमति लीन ।
तबौ दीनानाथ की कहाय बिलखाऊँ ना ॥
भौ उतरइया जगदीश मीत कीरति के ।
कलि की दोहाई जग रंचक डराऊँ ना ॥

(७१)

अपने बनाइबे कूँ रावरे दुआर पड़ी ।
स्वारथ के हेत जगदीश शर्ण छानी है ॥
हो तो जो न दुक्ख ताप पापन की भारी हाय ।
आइत तुराय काहे ढिग बिलखानी है ॥
पामर पवित्र करन वाले तूँ जगदीश ।
आपके भरोसे भव भीति नहिं मानी है ॥
कीर्ति के उधारिबे में देर ना लगावो नाथ ।
तूहीं तो अछिन्न निरवानी पद दानी है ॥

(७२)

अवतार लै वराह हिरन्याक्ष वध हेत ।
हृै नृसिंह भक्त प्रहलाद प्रान राख्यो है ॥
कच्छ अजित ह्वै कै सुरासुर समुंद्र मंथि ।
मोहनी वनाय रूप दैत्यन को छाक्यो है ॥
वामन वलिराजा के याचक त्रिलोक मई ।
ह्वैगे त्रिविक्रम अनन्त सुयस थाप्यो है ॥
मीन ह्वै विहार सलिल ज्ञान दै सत्य व्रतै ।
राम कृष्ण नाम जगदीश कीर्ति साँच्यो है ॥

(७३)

पशुराम नाम वौध कलकी औतार धार ।
युगन अनेकन महा कौतुक प्रमाना है ॥
ऐसे शक्तिवान दीनानाथ भगवान तूही ।
तासों जग जीवन के और ना ठिकाना है ॥
तेरी शर्ण आएते अभीत भे युगन वाले ।
तूहीं सरवेश एक देत निरवाना है ॥
कीर्ति प्रान जीवन अनन्त जगदीश प्रभु ।
सेवन सप्रेम नेम जग कल्याना है ॥

(७४)

जाय जगदीश के समीप दुख गान करूँ ।
भ्रमत अनेकन कुरीतिन के फंदे में ॥
संचित जो पाप ताकी घात अति गाढ़ी भई ।
छोड़त ना निर्दई सिरात दिन द्वंदे में ॥
कष्टित महान ग्लान छाई है दोहाई कलि ।
कैसे निरवाहूँ सत कृत्य अघ गंदे में ॥
दीनानाथ पावन की शरण बिना ना ठौर ।
सर्व कष्ट कीरति निवार चर्ण वंदे में ॥

(७५)

बड़ो के बनाइवे में नाम नहिं दीनानाथ ।
दीनन को दीन शर्ण ताहि सों कृपाल हो ॥
जबै सत्त कर्म नस्यो तबहीं संरक्षण कै ।
धर्म कै प्रवर्त्तन त्रैलोक्य प्रतिपाल हो ॥
धेनुको चरायो द्विज संत हितकार कीले ।
अदभुत माहात्म साँचे तुमहीं गोपाल हो ॥
चरणामृत गंगा तरंतारि हितकार जग ।
ऐसे पद पंकज के कीर्ति व्रत पाल हो ॥

(७६)

अब काहे दीनानाथ धरि निठुराई एती ।
दीन की गोंहार प्रभु श्रौण नहीं धारी है ॥
काहे धौं बिसारयो बिरद आपन दयासिंधु ।
धार्यो है जो अब मौन जनहितकारी है ॥
आवो या बोलाबो शरण दै सुख छावो नाथ ।
दुरि हो जगदीश कहाँ कीर्ति की बारी है ॥
पाइहो न जान बिन दान त्राण शर्ण दिहे ।
पापिन के तारिबे की रीत तो तुम्हारी है ॥

(७७)

आवन अवश्य परी माधव स्वैरीति कृतै ।
वाढ़्यो कष्ट मेटन के योग्य जगदीश जू ॥
छोनिके बसइया रखइया मर्जाद तूँहीं ।
ववहीं विभूति आपहीं की जगदीश जू ॥
कष्ट टार्यो स्वजन शरण रक्षि बार बार ।
फेरिहूँ सम्हार होंथ आप जगदीश जू ॥
और ठौर त्रिभुवन में नाहिं तो दिखात है ।
कीर्ति प्रान जीवन चरण जगदीश जू ॥

(७८)

सीता कष्ट मेटन को रावण संघारि वंश ।
दीन्ह्यो सत पंथिन उबार अवधेश जू ।।
कंस कंक दैत्यन इत्यादि मारि राम कृष्ण ।
मेदनी का भार दुक्ख टार्यो कमलेश जू ।।
तन के कुमारगी औमन के तृष्णादि शत्रु ।
देत संताप पाप नासिए अखिलेश जू ।।
भौतिक बयारी दिनौ रात है झरझरात ।
जगदीश शर्ण कीर्ति काटिये कलेश जू ।।

(७९)

दीनानाथ नाम दीन हितकार जानि प्रभु ।
धैर्य धारि अवतो शरण जाऊँ आतुरी ।।
करिहैं विध्वंस नाथ पातक संताप सर्व ।
स्वजन सहइया से लगाऊँगी नातुरी ।।
देहैं जो अभैकर कृपालु जगदीश ईश ।
चरण प्रेम सेवा लै छुड़ाऊँ भव तापुरी ।।
बनि जइहैं कीर्ति जगदीश के द्वार पड़ि ।
लुटि जइहैं कलिकी कतूत अति चातुरी ।।

(८०)

आपन वनायो काहे गहर लगावो नाथ ।
विनै धरि श्रौण अव भ्रम ना वढ़ाइये ।।
देहु दरसाय निज शरण पुनीत हमें ।
अवहूँ वनावैं गति करुणा तो लाइये ।।
विछुड़े चौरासी सहस्रन भ्रमन पड़ि हैं ।
दरश प्रसाद देके जन्म तो छोड़ाइये ।।
आपन स्वभाव अनुसार कीर्ति अघ मेटि ।
दीनानाथ जगदीश पार तो लगाइये ।।

(८१)

मोहिं अपनइहो दर्शइहो की नाहिं नाथ ।
कैधौं जानि पातकी दुरैहो पद कंज को ।।
चिंतित हमेश रहूँ निज करतूतिन पै ।
कीमती कबूँन ग्लान ध्यान दुख भंज को ।।
कैसे के अगम्य शर्ण प्राप्त होऊँ दीनानाथ ।
मन ना थिरात भयो खेल सतरंज को ।।
तुमहीं सम्हारो जगदीश कीर्ति जन जानि ।
गुन-गान पाऊँ तो रिझाऊँ अघगंज को ।।

(८२)

हम नाथ पौरि परि दीनता पुकार रही ।
बिन दरशाए मुख जीवन रही नहीं ॥
कसक करेज उठ परस चरण बिन ।
कौनि हूँ प्रकार आस मिलैकी रहीं नहीं ॥
वह युक्ति जानी ना हमार की द्रवांऊँ तुम्हें ।
हाय बिन आप आंखें सौंवन वनी रहीं ॥
श्री जगदीशजू की बिना दया द्रिष्ठि शरण ।
कीर्ति हितकारी है त्रिलोक में कहीं नहीं ॥

(८३)

करुणा की बारी है हमारी दीनानाथ सुनो ।
द्या कै लगावो पार भव-भँवर भारी है ॥
नइया पुरानी पतवार सत्य हीन कैसे ।
होयगो उबार सुन विनती मुरारी है ॥
चरण सहारा दे किनार तो लगावो प्रभु ।
बूड़त गज तारयो सोई हौं आश धारी है ॥
जगदीश जीवन अधार सरवस्व तूँहीं ।
याही से तुम्हारी शर्ण कीरति पुकारी है ॥

(८४)

सुनो तो विनै रमेश क्लेश अति गाढ़ पर्‌यो ।
तुमहीं आधार ताते दरश दिखाइए ॥
स्वामी एक तूहीं त्रैलोक्य पार ब्रह्म सर्वेश ।
ताकी शण ताकी नाथ अनुभौ में आइये ॥
नाम भगवान भान मान त्यागि गान करूँ ।
मोकूँ जगदीश अब निकट बोलाइये ॥
सेवन चरण प्रेम नेम तो प्रदान करो ।
कीर्ति अपनाय सर्व दुक्ख विलगाइए ॥

(८५)

गज ग्रस्यो ग्राह को उबार्‌यो ना लगाई बेर ।
द्रौपदी की राखि लाज करुणा प्रसारी थी ॥
पांडवन रखि लक्षा गृह से निवारी त्रास ।
संगर संघारि दुष्ट वसुधा उबारी थी ॥
तंदुल असन करि सुदामा दरिद्र नस्यो ।
धर्‌यो पद निरवान मित्रता विचारी थी ॥
ऐसे हितकारी हैं जगतारी श्री जगन्नाथ ।
कीर्ति हूँ को तारो ज्यों अहिल्या प्रभु तारी थी ॥

(८६)

माखन चोरायो प्रेम गोपीन प्रधान जान ।
ऊखल बँधाय वात्सल्यता दिखायो नाथ ॥
रास रस मचाय राधारानी को निहोरो कै ।
अद्भुत विहार वृज लै गोप वृन्द साथ ॥
आपन वनाय सर्व भाँति सों स्वजन कीन ।
कृष्ण वलराम नंदलाल सो वृज नाथ ॥
ऐसे सुद्ध मूर्ति भे असुद्ध नहिं कतौ जाय ।
कीर्ति जगदीश सर्व व्यापी त्रैलोक नाथ ॥

(८७)

द्वारिका बिराजि दुष्ट नृपन को मद मोर्‌यो ।
मृतक जिआय पुत्र दीन गुरुराज को ॥
रुक्मिणी विवाह युक्त आठ पाट रानी संग ।
सोलह हजार रानी राँचीं यदुराज को ॥
पुत्र पौत्र अति वंश वाले भे निराले प्रभु ।
मायापति बँधूँ जगदीश शिर ताज को ॥
कै निमित्त सोई दुरवासै करवायो नास ।
कीर्ति के निरंजन समान कहो आजको ॥

(८८)

कौतुक निधान की अनोखी गति देखी कौन ।
वेद विधि महेश शेष नादौं छको रहै ॥
चिंतन में आवैं ना अमूर्तिं वाले सरवेश ।
कूट अव्यक्त जाको सरवहीं जको रहै ॥
सुलभ नहीं तो हैं पार ब्रह्म आदि पुरुष ।
महाँ विकराल जासों कालहूँ झको रहै ॥
ऐसो दीनानाथ दीन जन द्विज धेनु हेत ।
प्रगटै वो जगदीश कीर्तिं को सगो रहै ॥

(८९)

हमें ना विसारो दीनानाथ दीन हित कारी ।
औगुन अपावन विचारि शृण लीजिए ॥
सहस तुम्हारे तो उदार हैं त्रिलोक नाहिं ।
जैऊँ कहाँ आप द्वार छाडि़ दया कीजिए ॥
चरणारविंद सेवा नेम प्रेम देहु प्रभु ।
दरश प्रसाद दै अनिष्ट दूर कीजिए ॥
भारी हैं कुसंगत विसमता समाय रही ।
प्यारे जगदीश कीर्तिं भौ उवार कीजिए ॥

(६०)

महिमा चरणे की वखान कौन कवि करै ।
जाके अस्मरन पाप तृण सम जरिगो ॥
महा गिरि सहस अकर्म अचल शिर्धरे ।
गिर्धर के पद में विषम श्रम हरिगो ॥
सागर समान गम्भीर कष्ट जीर्ण जगत ।
कै कृपा अजित्त मंथि पाप सुधा भरिगो ॥
वास निर्भै चाहिबे को शरण वरण कीन ।
कीर्त्ति जगदीश गान में न कौन तरिगो ॥

(६१)

हमतौ उदार नाम दीनानाथ सुनि प्रभो ।
निश्चै करि वैठी भवतारन रमेश जू ॥
विगड़ी वनइहैं स्वाभाव अनुकुल नाथ ।
पातक विनासि जन हरत कलेश जू ॥
कौनिहूँ प्रकार अपनैहैं जो दया निधान ।
वनि जइहैं सर्व भाँति छूटी अंदेश जू ॥
जगदीश शरण पवित्र कूँ वरण कीन्हे ।
सामर्थ चरण सेवा दैहैं हृषीकेश जू ॥

(९२)

अव तो शर्णं जाय वर्वस वनइहौ गति ।
दीनानाथ नाम को भरोसो मोहिं भारी है ॥
त्रिभुवन आधीश आधीन सर्व जाके रहैं ।
रक्षक हमारो सांई जन हितकारी हैं ॥
कवहूँ तो दयालु अपनै हैं सुगति दैहैं ।
महिमा दुरैहैं कहाँ वेद जो पुकारी है ॥
तासों मोहिं भीति अव भव की लगे ना नेक ।
प्यारे जगदीश कीर्तिं चर्णं की पुजारी है ॥

(९३)

दइहो जो उवार स्वैनाम दीनानाथ वाले ।
जैहैं छूटि पाप विभो मेरी कलि वारी है ॥
युगन उवार्‌यो नेक नाहिं तो विचार्‌यो अघ ।
आप सो स्वभाव वही मोहिं क्यो विसारी है ॥
मेरे अकरमन को चित्त नहिं धारो नाथ ।
पातकी न मोंसो नाहिं तासों हेतकारी है ॥
तासों जगदीश अव शरण सुधार करो ।
औगुन हजार तवौ कीरति तुम्हारी है ॥

(६४)

सुनि हो पुकार दीन जान जगदीश प्रभो ।
हमरे तो टेक एक शरण तुम्हारी है ॥
औगुन भरी हूँ वीच भौंर में पड़ी हूँ तवो ।
दीनानाथ आस दृढ़ आपही की धारी है ॥
चाहे रूठि जावो चाहे ढिग ना बोलावो पर ।
करिहो उद्धार शर्ण गुण अनुसारी है ॥
दुरि कहाँ जइहो तुम्हें आवन पड़ी नाथ ।
कीर्ति जगदीश तेरी तुहीं जन तारी है ॥

(६५)

तरस तो खावो दिखावो दरश जगदीश ।
उजड़ी बसावो नसावो अनरीति नाथ ॥
आपन विभूति आय प्रभुजी बनाय जावो ।
गहर लगावो ना उबारो ऐ [illegible]ति नाथ ॥
महिमा अनंत भगवंत दीनानाथ तेरी ।
विपति छुड़ावो मिटावो अघ भीति नाथ ॥
ग्रसि कलि राख्यो नास्यो सत्य पंथ माधव जू ।
आय उद्धार करो मीत कीर्ति प्रीति गाथ ॥

(९६)

आश्रित रमेश जान आपन की त्रास हरो ।
तुम्हरे दुआर पड़ी भीति कलिराज की ॥
कतहूँ देखात नहिं रंचक विश्राम नाथ ।
तपित महान शर्ण ताकी यदुराज की ॥
संकट हटाय अपनावो करुणा निधान ।
त्राता एक तूहीं तासों नासो अघ व्याज की ॥
दीनानाथ नाम बलवान जाप गान करूँ ।
कीर्ति चरण चाह है त्रिलोकी शिर ताज की ॥

(९७)

ह्वै रही अधीर धीर धारो इत आय प्रभु ॥
गहर लगावोना छुड़ावो क्लेश हे नाथ ॥
गहर विपत्ति पड़ी करुणा कटाक्ष करो ।
काहे सो लगावो देर मेरी वेर हैं नाथ ॥
समझ न माने मन व्याकुल पुकारे तुम्हें ।
हैय काहे धारी निठुराई अब हे नाथ ॥
अघ विषै वस्य तो कछू ना चले जगदीश ।
कीर्ति को सहारो तेरो तारो भव हे नाथ ॥

(९८)

नैन बरसात भए दर्श बिन जगदीश ।
कबलों हमारी सुध नाथ को न आवैगी ॥
छबि सरसाय दुरि नील गिर जाय बसे ।
हूँ तो बिलखान दिवस कैसे बितावैगी ॥
कबहूँ तो आय पूँछो बिपत्ति हमार नाथ ।
शरण जू तुम्हारी ताप आपी नसावैगी ॥
रूठे हो जो तुमहीं तो मान तजि देहु चर्ण ।
कीर्ति प्रान गुन गान गाय तरि जावैगी ॥

(९९)

बिनती हमारी तापै ध्यान दीजे जगदीश ।
क्रूरती पुकार बार बार भौ उबार को ॥
जानू कछु धर्म नाहीं ज्ञानदान ब्रतांचार ।
दीनानाथ नाम के समान है उधार को ॥
शर्णं गत चाह मेरी सोई सत्य सार जन ।
माँगू सो पूर्ति करो अधमन उद्धार को ॥
कीर्ति प्रान जीवन नीलाद्रि जूके श्री चरण ।
गुन गान स्वंजन समान हेतकार को ॥

(१००)

करिए ढिठाई क्षमा आपन स्वजन जान ।
सत्य-सत्य दीनानाथ तुमहीं आधार हो ॥
कोई को भरोस नहिं आपी सरवस्व मेरे ।
तनमन प्रान धन धान्य परिवार हो ॥
आपन शरण करि करुणा प्रदान करो ।
जासों भव सागर सों आसु वेड़ा पार हो ॥
जगदीश प्रीति रीति कीर्ति की चरण धरो ।
स्वीकृत गुनगान करो दरश तुम्हार हो ॥

विनय

दोहा

चर्ण शर्ण जगदीश जू, कीरति करै पुकार ।
पाप मोंचि प्रभु देहु गति, तुमतो परम उदार ॥
आप प्रसाद सुचर्ण कृत, वुद्धि मोर वड़वार ।
कवितई जानू नहीं, कीर्ति कृपाल उवार ॥

इति श्री जगदीश कीर्ति सतक समाप्तम्
श्रीमंदीनानाथार्पणमस्तु । शुभम् भूयात् ।
लेखिका कीर्ति देवी रीवाँ राज